अन्य धर्मों का क्या?

ठीक है, सभी जन, मुझे आप सभी को फिर से
इकट्ठा करने कि इजाज़त दें, आपको एकत्रित करने दें,

और मैं कोशिश करके जवाब देने जा
रहा हूँ उस बड़े प्रश्न का

जो हमने इस सप्ताह के लिए चुना है, जो हैः
अन्य धर्मों का क्या?

मुझे यह लगता है कि जाने माने स्तर पर,
जब हम धर्मों के बारे में बात करते हैं,

बहुत लोग सामान्य रूप से हमें कहते है,
'सबसे महत्वपूर्ण मसला है

निष्कपट होना।
आप क्या विश्वास करते हैं यह कोई मायने नहीं रखता।

जहाँ तक आप निष्कपट हैं,'
तो ठीक है। यह अच्छा स्तर है, है ना?

'निष्कपटता सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है।'

अब, मुझे ऐसा लगता है की हमारे
जीवन के कई अन्य भागों में

निष्कपटता काफी नहीं है। हम जानते हैं,
है ना?

मैं आपको दो उदाहरण दूँगा।
अगर मैं इस दुनिया के

सबसे सुंदर देश
में जाना चाहूँ...

तो मैं कहाँ जाने के बारे में विचार कर रहा हूँ?
स्कॉटलैंड, ठीक है? सुंदर।

अगर मैं जाकर गर्मी सोखना चाहूँ,
तो मैं वहीं जाना चाहता हूँ।

तो मैं स्कॉटलैंड जाता हूँ,
और मैं तो यहाँ उत्तरी-पूर्व इंगलैंड में हूँ

© Lee McMunn, 2011

और मैं स्कॉटलैंड जाना चाहता हूँ,
तो मैं इस देश के मध्य कि ओर बढ़ता हूँ

बड़े महामार्ग पर,
और तब मेरे पास चुनाव है।

मैं या तो दक्षिण के ओर जा सकता हूँ, या उत्तर कि ओर
तो मैं अपनी कार लेकर दक्षिण कि ओर जाता हूँ,

और मेरे कार के यात्री जा रहे हैं,

'एक मिनिट रूकिए! आप क्या कर रहें हैं?'
और मैं कहता हूँ, 'नहीं, नहीं। सब ठीक है।

मैं निष्कपटता से विश्वास करता हूँ, सचमुच हृदयपूर्वक,
अगर मैं दक्षिण की ओर जल्द गाड़ी चलाऊँ,

तो हम स्कॉटलैंड पहुँच जाएँगे।
क्या आप मेरे साथ हैं?'

वे क्या कहेंगे? ठीक है,
पर निष्कपटता काफी नहीं है।

मैं निष्कपटता पूर्वक गलत भी हो सकता हूँ।
या यदि हम पिछे का याद करें

कभी दी हुई परिक्षाओं के बारे में,

या आगे आने वाली परिक्षाओं के बारे में,

अच्छा, कल्पना करें कि जिस प्रश्न
का आपको उत्तर देना है,

उन प्रश्नों में से एक है
'स्कॉटलैंड की राजधानी क्या है?'

और आप सोचते है,
'हे ईश्वर! यह कठिन है!'

और आप लिख रहें हैं, और आप लिखते हैं 'कारडीफ'।
ठीक है, आप बस यहि लिखते हैं।

और आप आपके पेपर के वापस
आने की प्रतीक्षा करते हैं,

आप उसकी ओर देखते हैं, और वहाँ एक बड़ा लाल
क्रौस का निशान है। गलत। आपको गुस्सा आता है,

© Lee McMunn, 2011

तो आप क्या करते हैं? आप आपके शिक्षक के
पास जाकर कहते हैं, 'यह क्या है?'

और शिक्षक कहते है, 'अच्छा, यह गलत है, है ना?'
और आप कहते है, 'नहीं।

मैं सचमुच निष्कपटता से विश्वास करता हूँ
की वह कारडीफ था।'

अच्छा, तब वह आपसे क्या कहेंगे? फिर भी गलत,
है ना?

आप आपके विश्वास की निष्कपटता से परिक्षा
में उत्तीर्ण नहीं होते, नहीं ना? बिलकुल भी।

यदि ऐसा होता तो हम सभी 100% प्राप्त करते।
नहीं, यह ऐसी बात नहीं है।

हम जानते हैं की जीवन के कई भागों में
निष्कपटता काफी नहीं।

क्योंकि आप निष्कपटता से गलत भी हो सकते हैं।
तो धर्म के क्षेत्र में क्या?

क्या निष्कपटता काफी है या
वह बहुत, बहुत अलग है?

अच्छा, मैं आपको याद दिलाता हूँ की आज रात
हमने क्या खोज की है, यीशु के वचन।

ये हैं जो यीशु ने कहे हैं, और ये बहुत विवादास्पद हैं,
और तो भी कितना अच्छा समाचार हैं।

अब, यीशु ने यह कहा था,
यूहन्ना अध्याय 3 में से।

हमने उन्हें सुन चुके हैं,
परंतु मुझे उन्हें फिर से पढ़ने दें।

यीशु यूहन्ना 3 की 18 आयत में कहते हैः
"जो कोई उस पर विश्वास करेगा" - यीशु में -

"उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परंतु जो उस
पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है,

© Lee McMunn, 2011

इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम
पर विश्वास नहीं किया।"

अब, यीशु क्या कह रहे हैं?
आप सोचेंगे कि मुझ पर जुनून सवार हुआ है

जहाज़ और महासमुद्रों का,
परंतु मुझे बताने दें की वह क्या नहीं कह रहा।

वह यह नहीं कह रहा की जीवन
एक जहाज़ कि तरह है

और हम सब उसमें यात्रा करते हुए,
हम में से प्रत्येक जन, एक सुंदर जगह कि ओर बढ़ रहे हैं,

और हमारी इस सुंदर जगह
तक की यात्रा में

हमें सिर्फ इतना करना है की हमें जहाज़ कि जो छत
पसंद है वह चुननी है।

आप जानते है, वह यह नहीं कह रहा है। वह यह
नहीं कह रहा की, 'अगर आप मसीहियत पसंद करते हैं

तो इस छत पर हो सकते हैं, अगर आप अन्य
धर्मों को पसंद करते हैं, तो इस छत पर जाएं...

दरअसल, अगर आप खुद बनाना चाहते हैं,
आपकी अपनी पसंद का धर्म तो

इस से कोई फर्क नहीं पड़ता, सिर्फ अपने
आप का दिल बहलाएं,

खोजें की आपके लिए क्या जंचता है
और सब कुछ ठीक होगा।'

वह कहता है जीवन 'तैरता जहाज़' नहीं,
वह 'डूबता जहाज' हैं।

परंतु वह जो कह रहा है,
और इसलिए यह आज इतना विवादास्पद है,

वह कहता है की सिर्फ एक ही जीवन नैय्या है
जो हमें पार लेके जाएगी।

© Lee McMunn, 2011

वह कहता है की वहाँ अन्य जीवन नैय्या भी हैं
जो यह दावा करती हैं की वह आपको बचा सकती हैं,

परंतु यीशु, इन वचनों के अनुसार,
कहता है 'जो कोई मुझ पर विश्वास करता है,

और सिर्फ मुझपर, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं।'

वह कहता है की जो अन्य जीवन नैय्यां जिन्हें आप देखते हैं ,
वे समुद्र के लायक नहीं है।

वे आपको बिलकुल नहीं बचाएंगी ।
तो यीशु यह नहीं कह रहे कि,

'मैं आपको बताने के लिए आया हूँ
अपनी जीवन नैय्यां कैसे बनाएँ।'

उसने नहीं कहा, 'मैं आपको निर्देश देने आया हूँ,
और अगर आप इनका पालन करो,

तो आप अपनी नाव खुद बना सकते हैं और आप उस
जहाज़ से उतर सकते हैं।' ऐसा बिलकुल भी नहीं है।

यीशु सच्चाई को बताने के लिए आया है,
और वह हमारी जीवन नैय्यां है, वह हमारा बचाव है।

अब, वह कहता है की सिर्फ एक ही
जीवन नैय्यां है जो समुद्रयोग्य ही,

जो उस जहाज़ से हमें बचा सकती है,
और वह वही है।

और जैसे की हमने पहले देखा,
हमें अंदर प्रवेश करना है।

अब, यह काफी विवादास्पद है,
है ना, हमारी संस्कृती में, यीशु के लिए

यह एक मात्र दावा करना?

यह एक दिलचस्प बात हैः हमें यह ध्यान देना है
की यीशु ने स्वयः यह दावा किया।

तो अगर हमारा इसके लिए कोई ऐतराज़ है, और कुछ
लोगों का इससे ऐतराज़ अवश्य है,

© Lee McMunn, 2011

हमारा ऐतराज़ किस से हैं? स्वयः
यीशु से। यह उसके वचन हैं जो कहते हैं

'मैं बचानेवाला मार्ग हूँ।' और तब भी मैं सोचता हूँ की यह
सचमुच अच्छी खबर है।

क्या आप जीवन की बड़ी चीज़ों में निश्चिचता
पसंद नहीं करते?

मुझे निश्चिचता पसंद है।
जब कभी मैने हवाई जहाज़ में सफर किया है,

और जब पायलट यात्रा की शुरुवात करने से पहले
आता है और वह सचमुच दृढ़ होता है

वह सचमुच दृढ़ होता है की कैसे जहाज़ को उड़ाएगा और
वह कहाँ जा रहा है,

और वह सचमुच विश्वासपूर्ण दिखता है की
कैसे हवाई जहाज़ को उतारेगा,

मैं सोचने नहीं लग जाता, 'अरे,
वह कितना घमण्डी आदमी है। मुझे विश्वास नहीं होता कि

हमारे पास ऐसा पायलट है।' आप क्या करते अगर
आप हवाई जहाज़ में होते,

और शुरुवात में इन्टरकॉम पर,
कुछ इस तरह की निराशाजनक आवाजें आती और जाती

'नमस्कार! अम्म, मुछे पक्का नहीं पता
कि इसे कैसे उड़ाना है,

और मैं सचमुच नहीं जानता की मैं क्या कर रहा हूँ,
परंतु मैं कोशिश करूँगा उसे नीचे उतारने की।'

क्या? नहीं! नहीं! हम उन बातों मे निश्चितता चाहते हैं जो
हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

तो परमेश्वर के बारे में क्या? परमेश्वर के साथ संबंध?
हमारा अनंत धाम?

अच्छा, यह बड़ी बातें हैं।
तो, जबकि यह विवादास्पद है फिर भी,

© Lee McMunn, 2011

यह वास्तव मे अच्छा है की यीशु इसे बिलकुल
स्पष्ट बताते है।

तो हम उसपर क्यों विश्वास करें?
हम क्यों विश्वास करें की यह सच हैं?

अच्छा, मैं दो बातें कहुंगा।
यीशु की पहचान।

याद करें की वह कौन है।
प्रकाशन याद करेः

यीशु ज्ञान के एक महत्वपूर्ण बिंदु से
बोलने का दावा करते हैं।

वह सच बोल सकते हैं। वे जानते हैं की वे
किस बारे में कह रहे हैं,

और इसलिए वे सिर्फ इसके बारे में अंदाज़ा नहीं लगा रहे,
ऐसे ही कोई मनघड़ंत बात बनाते हुए।

वे सचमुच जानते हैं की वे क्या कह रहे है। इसलिए,
हमें उसकी सुननी चाहिए।

चाहे वह प्रसिद्ध न हों, परंतु केवल इसलिए
कि कुछ प्रसिद्ध है

इसका मतलब यह नहीं होता कि वह सही है।
वह चाहे प्रसिद्ध न हों, परंतु यीशु

ज्ञान के एक महत्वपूर्ण बिन्दु से बात कर सकते हैं।
और याद रखने वाली दूसरी बात है

जो यीशु ने किया। यहाँ परमेश्वर का अनंत पुत्र है,
और वह हम सब के लिए

एक महत्वपूर्ण नाटकीय छुटकारे के मिशन पर आया है,
एक ही और अंतिम बार क्रूस पर मरने के लिए।

अगर उसे यह करना था, अच्छा, आप क्या यह नहीं
सोचते की परिस्थिती इतनी गंभीर थी

की यही उसका एकमात्र पर्याय था?
इसका कोई और पर्याय कैसे हो सकता है

© Lee McMunn, 2011

अगर परमेश्वर के अनंत पुत्र को इस तरह
मरना होगा जैसे की उसने किया?

और सोचिए की यह सब किस लिएः
ताकी परमेश्वर जिसने

हमें उत्पन्न किया उससे हमारा रिश्ता बन सके।
तो अन्य धर्मों के बारे में क्या?

अच्छा, यीशु के शब्दों में, वह एकमात्र उद्धारकर्ता होने
का दावा कर रहा हैं।

परंतु यह सुसमाचार है, क्योंकि आप भी,
मेरी तरह, जानना चाहते हैं,

'मैं अपने निर्माणकर्ता के साथ कैसे जुड़ सकता हूँ?'
और यीशु कहते हैं,

'मेरे पास आओ आप जैसे भी हो,
मुझे नियंत्रण लेने दो,

और आप जुड़ सकते है, फिर से एक साथ
उस परमेश्वर के साथ जिसने हमें उत्पन्न किया।'

अच्छा, हम अपने-अपने टेबल्स पर लौटेंगे।
इसके बारे में बातचीत करें

और देखें कि आप इसका क्या सार निकालते हैं।

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com